Workshop on
Biotechnology: Vision and Way Forward-Himachal Pradesh
19th July, 2017

A one day workshop on **Biotechnology: Vision and Way Forward-Himachal Pradesh** was organised by the Department of Environment, Science & Technology at Holiday Home, Shimla on 19th July 2017. The workshop was represented by more than 60 participants belonging to various Departments, R&D Institutions and 3 Universities of the State. The main focus of the workshop was to create a favourable environment to attract investment in biotechnology sector in the State for utilizing the vast reservoir of bioresources in a scientific and sustainable manner through convergence of expertise available at R&D Institutions, skilled manpower and Government initiatives. Addressing the workshop the Chief Guest, Sh. Tarun Kapoor, Additional Chief Secretary (Env. Science & Technology) said, "Himachal has a vast potential in the field of Biotechnology particularly bioresources based entrepreneurship to promote the industrial and other allied activities for creating livelihood opportunities in rural areas of the State." The State Biotechnology Policy is in place to convert Himachal Pradesh into a most sought after destination for investment in Biotechnology and Biobusiness, he further added. Dr. Tilak Raj Sharma, ED, NABI, Mohali, who was the Guest of Honor, highlighted different areas of importance in Biotechnology sector in the State. He further emphasised that all the stakeholders of Biotechnology in the State needs to work as a team to promote commercial Biotechnology in the State. Director, Environment, Science and Technology Mrs. Archana Sharma assured the best possible pro active support from the Government to the R&D Institutions in Biotechnology as the Department is already supporting few applied Biotechnology projects which are showing good results for the benefit of masses. Finally, the strategies on Vision and Way Forward for proliferation of applied Biotechnology in the State were summed up in the Workshop. The Status Report on Biotechnology containing valuable information on Biotechnology in the State was also released in the workshop. The progress of the ongoing R&D projects were presented during the Workshop by the implementing Institutions which were found to be generating the results in the expected lines.

One Day Stakel s' Work
olog ision and orward
Ju 17
ment of

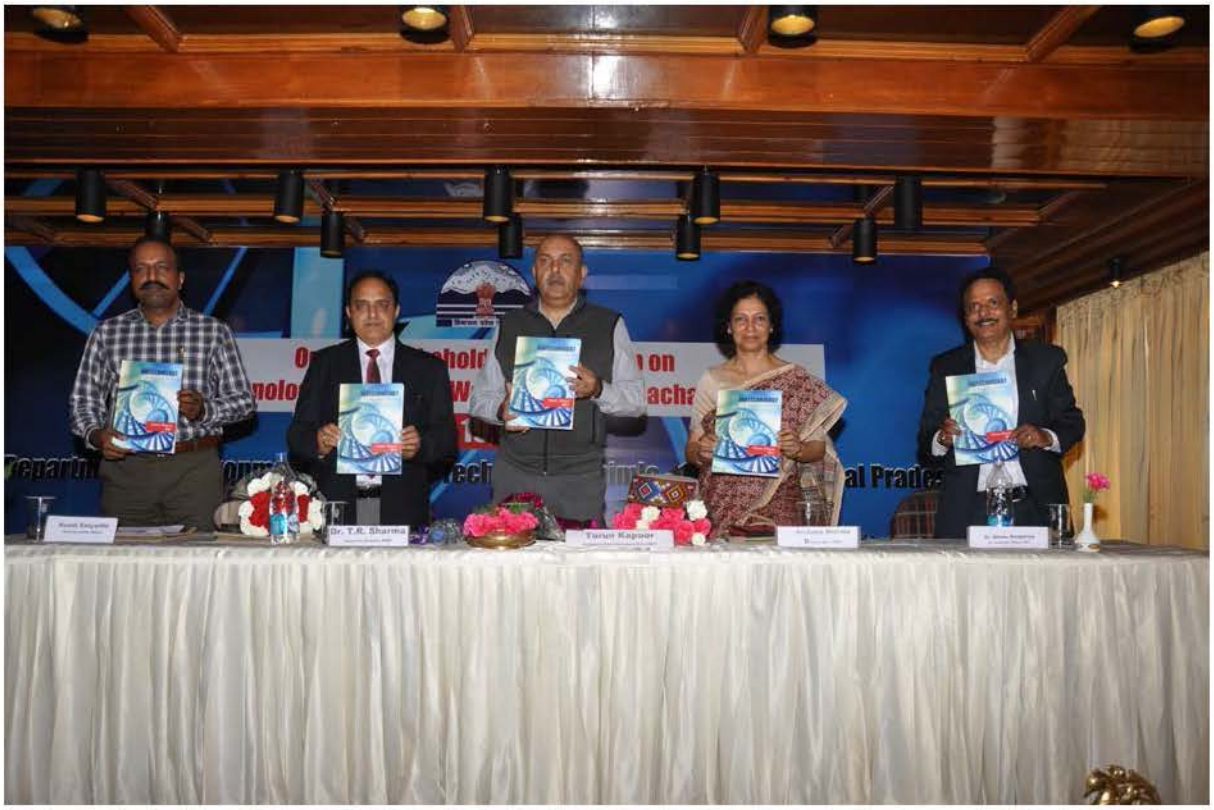

Day Stakeholders' Workshop
Vision and Way Forward -

rs' Workshop on
orward - Himach
2017

July 19, 2017

जैव प्रौद्योगिकी में ग्रामीणों को मिलेंगे रोजगार के मौके

■ पर्यावरण विज्ञान व प्रौद्योगिकी की कार्यशाला में बोले तरुण

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

जैव प्रौद्योगिकी में ग्रामीणों को रोजगार के कई अवसर मिल सकते हैं। पर्यावरण विज्ञान व प्रौद्योगिकी के कार्यक्रम में विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव तरूण कपूर ने ये जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेषकर जैव संसाधनों पर आधारित उद्योगों की अपार संभावनाएं हैं और इसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका अर्जन को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि राज्य की जैव प्रोद्यौगिकी नीति से बायो बिजनेस और बायो टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा मिलेगा। तरूण कपूर ने कहा कि पर्यावरण विभाग तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता के साथ कार्य किया जा रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

तरूण कपूर ने बायोटेक्नोलॉजी इन हिमाचल प्रदेश पुस्तक का विमोचन भी किया। इस कार्यशाला में विभिन्न विश्वविद्यालयों, विभागों और अनुसंधान संस्थानों के 60 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अधिक से अधिक निवेश आकर्षित करने के लिए प्रयास करना है ताकि प्रदेश की अपार जैव संपदा का वैज्ञानिक तरीके से उपयोग सुनिश्चित कर विकास को और गति प्रदान की जा सके।

औषधीय पौधों को बचाने और शोध कार्यों को बढ़ाने की अपील

कार्यशाला में एसीएस ने विशेषज्ञों से आग्रह किया कि प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में और अधिक कार्य सुनिश्चित करने के लिए वह अपने प्रस्ताव व शोधकार्य भी सरकार को प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी प्रदेश के औषधीय पौधों, दुर्लभ प्रजाति के वन्य प्राणी, प्रदूषण रहित स्वच्छ वातावरण को सहजने में अत्यंत सहायक है। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के किसानों, बागवानों को औषधीय पौधों को सहेजने की अपील की।

जैव विविधता से ग्रामीण आय में कर सकते हैं बढ़ौतरी : कपूर

जैव विविधता पर कार्यशाला आयोजित

शिमला, 19 जुलाई (ब्यूरो) : एनवायरन्मैंट, साइंस एंड टैक्नोलॉजी विभाग द्वारा जैव प्रौद्योगिकी विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें अतिरिक्त मुख्य सचिव तरुण कपूर ने बतौर मुख्यातिथि भाग लिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेषकर जैव संसाधनों पर आधारित उद्योगों की अपार संभावनाएं हैं और इसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका अर्जन को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि राज्य की जैव प्रौद्योगिकी नीति से बायो बिजनैस और बायो टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा मिलेगा। तरुण कपूर ने कहा कि पर्यावरण विभाग तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता के साथ कार्य किया जा रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। उन्होंने विषय विशेषज्ञों से आग्रह किया कि प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में और अधिक कार्य सुनिश्चित करने के लिए वे अपने प्रस्ताव व शोधकार्य भी सरकार को प्रस्तुत करें, ताकि इस दिशा में और अधिक सकारात्मक प्रयास किए जा सकें। उन्होंने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी प्रदेश के औषधीय पौधों, दुर्लभ प्रजाति के वन्य प्राणी और प्रदूषणरहित स्वच्छ वातावरण को सहजने में अत्यंत सहायक है। उन्होंने हिमाचल के किसानों-बागवानों को जागरूक करने के लिए संबंधित विषय विशेषज्ञों और विभाग से भरपूर सहयोग देने की अपील की। इस मौके पर उन्होंने बायो टैक्नोलॉजी इन हिमाचल प्रदेश पुस्तक का विमोचन भी किया। डा. तिलक राज शर्मा इं.डी. एन.ए.बी.आई. मोहाली ने प्रदेश में बायो प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में हितधारकों को इकट्ठे होकर कार्य करना चाहिए, ताकि जैव प्रौद्योगिकी को व्यापिज्य स्तर पर प्रोत्साहित किया जा सके। निदेशक पर्यावरण विज्ञान व प्रौद्योगिकी अर्चना शर्मा ने कहा कि अनुसंधान क्षेत्र में कार्यरत सभी संस्थानों को विभाग द्वारा हरसंभव मदद प्रदान की जाएगी। कार्यशाला में विभिन्न विश्वविद्यालयों, विभागों और अनुसंधान संस्थानों के 60 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

जैव प्रौद्योगिकी नीति से बढ़ेगा हिमाचल में निवेश : तरुण

शिमला में आयोजित कार्यशाला में बोले अतिरिक्त मुख्य सचिव

अमर उजाला ब्यूरो

शिमला।

राजधानी शिमला के होटल ट्रिपल एच में बुधवार को पर्यावरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से जैव प्रौद्योगिकी विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता अतिरिक्त मुख्य सचिव तरुण कपूर ने की। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेषकर जैव संसाधनों पर आधारित उद्योगों की अपार संभावनाएं हैं। इसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका अर्जन को भी बढ़ावा मिलेगा।

उन्होंने कहा कि राज्य की जैव प्रौद्योगिकी नीति से बायो बिजनेस और बायो टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा मिलेगा। पर्यावरण विभाग और विभिन्न विश्वविद्यालयों की ओर से जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम

कहा, औषधीय पौधे, दुर्लभ वन्य प्राणी जैव प्रौद्योगिकी को सहेजने में सहायक

से विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता के साथ कार्य किया जा रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। उन्होंने विषय विशेषज्ञों से आग्रह किया कि प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में और अधिक कार्य सुनिश्चित करने के लिए वे अपने प्रस्ताव और शोधकार्य भी सरकार को प्रस्तुत करें। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कहा कि जैव प्रौद्योगिकी प्रदेश के औषधीय पौधों, दुर्लभ प्रजाति के वन्य प्राणी, प्रदूषण रहित स्वच्छ वातावरण को सहेजने में अत्यंत सहायक है। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के किसानों, बागवानों को जागरूक करने के लिए संबंधित विषय विशेषज्ञों और विभाग से भरपूर सहयोग देने की अपील की। इस अवसर पर मोहाली से आए डॉ. तिलक राज शर्मा ने प्रदेश में बायो प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में हित धारकों को इकट्ठे होकर कार्य करना चाहिए। निदेशक पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अर्चना शर्मा ने कहा कि अनुसंधान क्षेत्र में कार्यरत सभी संस्थानों को विभाग द्वारा हर संभव मदद प्रदान की जाएगी। कार्यशाला के दौरान अतिरिक्त मुख्य सचिव तरुण कपूर ने बायो टेक्नोलॉजी इन हिमाचल प्रदेश पुस्तक का विमोचन भी किया। कार्यशाला में विभिन्न विवि, विभागों और अनुसंधान संस्थानों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अधिक से अधिक निवेश आकर्षित करने के लिए प्रयास करना है।